39 सूरए अज़ ज़ुमर

आयत 1

आयत का अनुवाद:

"ख़ुदा के नाम से (शुरू करता हूँ) जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। (इस) किताब (क़ुरान) का नाज़िल करना उस ख़ुदा की बारगाह से है जो (सब पर) ग़ालिब हिकमत वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत क़ुरान को एक ऐसे ख़ुदा की तरफ से घोषित करती है जो हिकमत वाला है।

हेतु (Reason):

यह आयत यह दावा करती है कि क़ुरान एक उच्च ज्ञान वाले ख़ुदा की तरफ से नाजिल हुआ है। लेकिन इस दावा को किसी भी प्रमाण या सार्वभौमिक साक्ष्य द्वारा समर्थन नहीं किया गया है।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में, विशेषकर वैशेषिक दर्शन के अनुसार, कोई भी ज्ञान केवल अनुभवजन्य प्रमाणों के आधार पर सत्य माना जा सकता है। यहाँ क़ुरान के स्रोत का दावा बिना किसी दृश्य या वैज्ञानिक प्रमाण के किया गया है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण के सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि यह दावा बिना प्रमाण के किया गया है, और इसको सार्वभौमिक रूप से स्वीकारा नहीं जा सकता।

आयत 2

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) हमने किताब (क़ुरान) को बिल्कुल ठीक नाज़िल किया है तो तुम इबादत को उसी के लिए निरा खुरा करके ख़ुदा की बन्दगी किया करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
कुरान को नाजिल करने के बाद, इबादत का केंद्र केवल ख़ुदा होना चाहिए।
हेतु (Reason):
यह आयत इबादत को केवल ख़ुदा के लिए करने का आदेश देती है, लेकिन यह आधारभूत तर्क और प्रासंगिकता को प्रस्तुत नहीं करती कि क्यों केवल कुरान ही इसका सही मार्गदर्शन कर सकता है। अन्य धार्मिक ग्रंथों में भी ईश्वर की पूजा का महत्व है, जो विविध सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोणों से सही साबित होता है।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 22) में यह कहा गया है कि जो लोग परमात्मा की भक्ति करते हैं, उन्हें स्वयं परमात्मा का आश्रय मिलता है। यह दिखाता है कि विभिन्न मार्ग और धार्मिक दृष्टिकोण भी सत्य और ईश्वर की भक्ति के लिए वैध हो सकते हैं।
निगमन (Conclusion):
यह आयत धार्मिक विविधता और बहुलतावाद के सिद्धांत से अनभिज्ञ है, और इसलिए इसका दावा सार्वभौमिक नहीं हो सकता।

आयत 3
आयत का अनुवाद:
"आगाह रहो कि इबादत तो ख़ास ख़ुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (औरों को अपना) सरपरस्त बना रखा है और कहते हैं कि हम तो उनकी परसतिश सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये लोग ख़ुदा की बारगाह में हमारा तक़र्रुब बढ़ा देगें, इसमें शक नहीं कि जिस बात में ये लोग झगड़ते हैं (क़यामत के दिन) ख़ुदा उनके दरम्यिान इसमें फ़ैसला कर देगा, बेशक ख़ुदा झूठे नाशुक्रे को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि केवल ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए, और दूसरों की पूजा करने से कोई लाभ नहीं होगा।

हेतु (Reason):

यह तर्क करता है कि दूसरों को सरपरस्त बनाने से कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि ख़ुदा ही असली सरपरस्त है। हालांकि, यह कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता कि अन्य धर्मों और विश्वासों में भी ऐसा कोई दोष है।

उदाहरण (Example):

संख्य योग के अनुसार, ईश्वर को परम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है, लेकिन यह दूसरों के प्रति सम्मान और धार्मिक विविधता को नकारता नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत धर्म की बहुलता और विविधता की उपेक्षा करती है और इसके आधार पर सार्वभौमिक सत्य नहीं स्थापित किया जा सकता।

आयत 4

आयत का अनुवाद:

"अगर ख़ुदा किसी को (अपना) बेटा बनाना चाहता तो अपने मख़लूक़ात में से जिसे चाहता मुन्तखिब कर लेता (मगर) वह तो उससे पाक व पाकीज़ा है वह तो यकता बड़ा ज़बरदस्त अल्लाह है।"

चुना गया न्याय तत्व:

उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा अपने मख़लूक़ात में से किसी को भी अपना बेटा बना सकता है, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

हेतु (Reason):

यह तर्क केवल ख़ुदा की ताकत और उसकी अद्वितीयता को सिद्ध करता है, लेकिन यह ईश्वर के साथ तुलना करने की कोई आवश्यकता नहीं महसूस करता।

उदाहरण (Example):

वैशेषिक दर्शन के अनुसार, ईश्वर का रूप असीम और अद्वितीय है, और किसी तुलना की आवश्यकता नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत ईश्वर के रूप की तुलना करके उसको समझने की कोशिश करती है, लेकिन ऐसा करना गलत है क्योंकि ईश्वर का अस्तित्व और रूप व्यक्तिगत अनुभव से परे है।

आयत 5

आयत का अनुवाद:

"उसी ने सारे आसमान और ज़मीन को बजा (दुरूस्त) पैदा किया वही रात को दिन पर ऊपर तले लपेटता है और वही दिन को रात पर तह ब तह लपेटता है और उसी ने आफताब और महताब को अपने बस में कर लिया है कि ये सबके सब अपने (अपने) मुक़र्रर वक़्त चलते रहेगें आगाह रहो कि वही ग़ालिब बड़ा बख़्शने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत कहती है कि ख़ुदा ने सारी सृष्टि को अपने नियंत्रण में किया है, और वह सभी चीज़ों को अपने समय के अनुसार नियंत्रित करता है।

हेतु (Reason):

यह तर्क करता है कि ख़ुदा की शक्ति और नियंत्रण ही सभी चीज़ों का कारण है, लेकिन इसका आधार वास्तविक प्रमाण पर आधारित नहीं है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन के अनुसार, कारण और प्रभाव का संबंध स्पष्ट और प्रमाणित होना चाहिए। बिना किसी प्रमाण के केवल दावा करना सही नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को ख़ुदा की इच्छा से जोड़ने का प्रयास करती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

1	**प्रमाण**	**कुरान के स्रोत का दावा बिना प्रमाण के किया गया।**
2	**हेतु**	**इबादत का केंद्र केवल कुरान क्यों है, इसका कोई तर्क नहीं।**
3	**प्रमाण**	**धार्मिक विविधता का अभाव, यह सार्वभौमिक सिद्धांत नहीं हो सकता।**
4	**उपमान**	**ईश्वर के रूप की तुलना गलत है, क्योंकि वह अद्वितीय है।**
5	**व्याप्ति**	**प्राकृतिक घटनाओं को ख़ुदा की इच्छा से जोड़ने का दावा बिना प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में कई बार बिना प्रमाण और तर्क के धार्मिक विश्वासों का प्रस्तुतिकरण किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार सही नहीं है।

आयत 6
आयत का अनुवाद:
"उसी ने तुम सबको एक ही शख़्स से पैदा किया फिर उस (की बाक़ी मिट्टी) से उसकी बीबी (हौव्वा) को पैदा किया और उसी ने तुम्हारे लिए आठ क़िस्म के चारपाए पैदा किए वही तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में एक क़िस्म की पैदाइश के बाद दूसरी क़िस्म (नुत्फे जमा हुआ ख़ून लोथड़ा) की पैदाइश से तेहरे तेहरे अँधेरों (पेट) रहम और झिल्ली में पैदा करता है वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसी की बादशाही है उसके सिवा माबूद नहीं तो तुम लोग कहाँ फिरे जाते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ने मानवों की उत्पत्ति एक ही व्यक्ति से की, और उसके बाद से सृष्टि की सारी प्रक्रिया को नियंत्रित किया है।
हेतु (Reason):
यह आयत दावा करती है कि ख़ुदा ने सृष्टि की उत्पत्ति की है, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण या तार्किक आधार प्रस्तुत नहीं किया गया है।

उदाहरण (Example):
वैशेषिक दर्शन के अनुसार, सृष्टि का उत्पत्ति केवल ईश्वर से नहीं, बल्कि प्राकृतिक कारणों और प्रभावों से होती है, जैसा कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सिद्ध होता है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसका कोई साक्ष्य नहीं है, जिससे इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारा नहीं जा सकता।

आयत 7
आयत का अनुवाद:
"अगर तुमने उसकी नाशुक्री की तो (याद रखो कि) ख़ुदा तुमसे बिल्कुल बेपरवाह है और अपने बन्दों से कुफ्र और नाशुक्री को पसन्द नहीं करता और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते पसन्द करता है और (क़यामत में) कोई किसी (के गुनाह) का बोझ (अपनी गर्दन पर) नहीं उठाएगा फिर तुमको अपने परवरदिगार की तरफ लौटना है तो (दुनिया में) जो कुछ (भला बुरा) करते थे वह तुम्हें बता देगा वह यक़ीनन दिलों के राज़ (तक) से ख़ूब वाक़िफ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि अगर व्यक्ति ख़ुदा के प्रति आभार व्यक्त करता है तो वह ख़ुदा को पसंद आता है, और जो नाशुक्रा होता है, उसे ख़ुदा परवाह नहीं करता।
हेतु (Reason):
यह आयत ख़ुदा के प्रति आभार को व्यक्त करने की महत्ता पर बल देती है, लेकिन यह तर्क स्पष्ट नहीं है कि क्यों केवल कुरान में बताए गए तरीके ही सही हैं, और क्यों अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों में आभार व्यक्त करना गलत होगा।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 22) में कहा गया है कि जो लोग सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करते हैं, उन्हें परमात्मा द्वारा आशीर्वाद प्राप्त होता है। यह दर्शाता है कि आभार और पूजा के कई तरीके हैं, और वे सभी सत्य के मार्ग पर ले जाते हैं।
निगमन (Conclusion):

यह आयत विविधता के सिद्धांत के विपरीत है, और केवल एक तरीके को श्रेष्ठ मानने का दावा करती है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।

आयत 8

आयत का अनुवाद:

"और आदमी (की हालत तो ये है कि) जब उसको कोई तकलीफ पहुँचती है तो उसी की तरफ रूझू करके अपने परवरदिगार से दुआ करता है (मगर) फिर जब ख़ुदा अपनी तरफ से उसे नेअमत अता फ़रमा देता है तो जिस काम के लिए पहले उससे दुआ करता था उसे भुला देता है और बल्कि ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (उस ज़रिए से और लोगों को भी) उसकी राह से गुमराह कर दे (ऐ रसूल ऐसे शख़्स से) कह दो कि थोड़े दिनों और अपने कुफ्र (की हालत) में चैन कर लो।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि जब किसी को तकलीफ होती है तो वह ख़ुदा से दुआ करता है, लेकिन जब उसे कोई नेमत मिलती है, तो वह इसे भूलकर ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है।

हेतु (Reason):

यह आयत व्यक्ति के कृत्य को दोषी ठहराती है, लेकिन यह नहीं बताती कि क्यों ऐसा होना स्वाभाविक है या फिर व्यक्ति को किस प्रकार के आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की आवश्यकता है।

उदाहरण (Example):

योगसूत्र में यह कहा गया है कि व्यक्ति का मन और आत्मा केवल एक ही उद्देश्य की ओर केंद्रित रहना चाहिए। जब मन भटकता है, तो वह दुष्कर्म की ओर बढ़ता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्यतिक्रम और भटकाव के कारणों को ठीक से स्पष्ट नहीं करती है, और इसका विचार आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अधूरा है।

आयत 9

आयत का अनुवाद:

"(आख़िर) तू यक़ीनी जहन्नुमियों में होगा क्या जो शख़्स रात के अवक़ात में सजदा करके और खड़े-खड़े (ख़ुदा

की) इबादत करता हो और आख़ेरत से डरता हो अपने परवरदिगार की रहमत का उम्मीदवार हो (नाशुक्रे) काफिर के बराबर हो सकता है (ऐ रसूल) तुम पूछो तो कि भला कहीं जानने वाले और न जाननेवाले लोग बराबर हो सकते हैं (मगर) नसीहत इबरतें तो बस अक़्लमन्द ही लोग मानते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जो व्यक्ति ख़ुदा की पूजा करता है और आख़िरत से डरता है, वह किसी नाशुक्रे व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता।
हेतु (Reason):
यह आयत यह सोचने का प्रयास करती है कि पूजा और धर्म में विश्वास करना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह यह भी नहीं बताती कि "जानने" और "न जानने" का अंतर क्या है।
उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार, ज्ञान और भक्ति का तरीका व्यक्तिगत अनुभवों और तर्कों से सिद्ध होता है, न कि केवल अंधविश्वास या निराकार पूजा से।
निगमन (Conclusion):
यह आयत आध्यात्मिक समझ के संदर्भ में एकतरफा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो सभी धार्मिक दृष्टिकोणों को समान रूप से सम्मानित नहीं करती।

आयत 10
आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे ईमानदार बन्दों अपने परवरदिगार (ही) से डरते रहो (क्योंकि) जिन लोगों ने इस दुनिया में नेकी की उन्हीं के लिए (आख़ेरत में) भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन तो कुशादा है (जहाँ इबादत न कर सको उसे छोड़ दो) सब्र करने वालों ही की तो उनका भरपूर बेहिसाब बदला दिया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जो लोग नेकी करते हैं, उन्हें आख़िरत में लाभ मिलेगा और उनके लिए पुरस्कार

है।

हेतु (Reason):

यह आयत धर्म और आस्था के प्रभाव को निश्चित करती है, लेकिन यह तर्क नहीं देती कि यह क्या कारण है कि केवल एक धर्म के लोग लाभ प्राप्त करेंगे और अन्य लोग नहीं।

उदाहरण (Example):

वेदांत में यह कहा गया है कि सत्य और कर्म के मार्ग पर चलने से व्यक्ति को आत्मा की शांति प्राप्त होती है, चाहे वह किसी भी धर्म का पालन करता हो।

निगमन (Conclusion):

यह आयत धर्म और विश्वास के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोणों को सम्मान नहीं देती, और केवल एक दृष्टिकोण को श्रेष्ठ मानती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमाण	सृष्टि उत्पत्ति का दावा बिना वैज्ञानिक प्रमाण के।
7	हेतु	आभार की महत्ता पर तर्क प्रस्तुत नहीं किया।
8	हेतु	व्यक्ति की भटकाव की स्थिति को ठीक से स्पष्ट नहीं किया।
9	उपमान	पूजा और विश्वास के तरीके को केवल एक दृष्टिकोण से समझाया गया।
10	व्याप्ति	विभिन्न धर्मों को समान रूप से सम्मानित नहीं किया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक सिद्धांतों की कमी है, और केवल एक धर्म और दृष्टिकोण को सही माना गया है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।

आयत 11

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं इबादत को उसके लिए ख़ास करके ख़ुदा ही की बन्दगी करो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रतिज्ञा (Proposition)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह निर्देश देती है कि इबादत केवल ख़ुदा के लिए की जाए।
हेतु (Reason):
यह आयत यह दावा करती है कि इबादत का एकमात्र उद्देश्य केवल ख़ुदा की पूजा है। हालांकि, यह तर्क नहीं देती कि अन्य धार्मिक परंपराओं में इबादत की विभिन्नता क्यों सही या गलत है।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 22) में कहा गया है कि भक्तों की विभिन्न विधियों में परमात्मा का मार्ग और आशीर्वाद सभी के लिए समान है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत एक पक्षीय दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो सभी धार्मिक आस्थाओं और पद्धतियों को समान महत्व नहीं देती, जिससे यह सार्वभौमिक नहीं हो सकती।

आयत 12
आयत का अनुवाद:
"और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहल मुसलमान हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि पैगंबर को सबसे पहले मुसलमान बनने का आदेश दिया गया।
हेतु (Reason):
यह आयत धार्मिक सत्य के संदर्भ में केवल एक धर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करती है, जबकि अन्य धार्मिक विश्वासों या मार्गों को नकारती है।
उदाहरण (Example):
वेदांत में यह कहा गया है कि सत्य की प्राप्ति विभिन्न मार्गों से होती है, और हर व्यक्ति अपनी आत्मा की स्थिति के अनुसार सर्वोत्तम मार्ग चुनता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल एक धर्म को सर्वोत्तम मानने के कारण अन्य धर्मों और आस्थाओं को अप्रमाणिक मानती है, जो सार्वभौमिकता के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।

आयत 13
आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़ी (सख़्त) दिन (क़यामत) के अज़ाब से डरता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि यदि कोई अपने परवरदिगार की नाफरमानी करता है, तो उसे क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब का सामना करना होगा।
हेतु (Reason):
यह आयत भय और दंड को एक प्रेरक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन यह यह नहीं बताती कि क्यों केवल एक धर्म की नाफरमानी पर ही क़यामत का दंड निर्धारित है।
उदाहरण (Example):
सांख्य योग में यह कहा गया है कि कर्मों का फल सभी के लिए समान रूप से होता है, जो धार्मिक आस्थाओं के पार जाता है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल एक धर्म के दृष्टिकोण को सही मानती है और अन्य आस्थाओं के प्रति असहिष्णुता दिखाती है, जो न्यायपूर्ण नहीं है।

आयत 14
आयत का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि मैं अपनी इबादत को उसी के वास्ते ख़ालिस करके ख़ुदा ही की बन्दगी करता हूँ (अब रहे तुम) तो उसके सिवा जिसको चाहो पूजो।"

चुना गया न्याय तत्वः
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि इबादत केवल ख़ुदा के लिए होनी चाहिए, और अन्य पूज्य वस्तुओं को पूजने का अधिकार है।
हेतु (Reason):
यह आयत एक सीमा पर कहती है कि अन्य पूज्य वस्तुएं भगवान के स्थान पर नहीं हो सकतीं, लेकिन यह अन्य धार्मिक मार्गों के प्रति असंवेदनशील दृष्टिकोण को स्वीकार करती है।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 23-25) में कहा गया है कि जो लोग अन्य देवताओं की पूजा करते हैं, वे भी उसी ईश्वर की पूजा कर रहे होते हैं, जो इस सृष्टि के रचनाकार हैं।
निगमन (Conclusion):
यह आयत विभिन्न धार्मिक विश्वासों की समानता को नकारती है और केवल एक दृष्टिकोण को सही मानती है, जो सार्वभौमिकता के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 15
आयत का अनुवादः
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि फिल हक़ीक़त घाटे में वही लोग हैं जिन्होंने अपना और अपने लड़के वालों का क़यामत के दिन घाटा किया आगाह रहो कि सरीही (खुल्लम खुल्ला) घाटा यही है कि उनके लिए उनके ऊपर से आग ही के ओढ़ने होगें।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जिन लोगों ने क़यामत के दिन घाटा किया, उनके लिए आग ही के ओढ़ने का सजा है।
हेतु (Reason):
यह आयत यह दावा करती है कि जो लोग सही रास्ते पर नहीं चलते, उन्हें भारी सजा मिलेगी, लेकिन यह अन्य

धार्मिक दृष्टिकोणों का अपमान करती है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि सजा और पुरस्कार का निर्धारण केवल कर्मों के आधार पर होता है, न कि किसी धर्म या विश्वास के आधार पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए एक पक्षीय विचार प्रस्तुत करती है, जो सार्वभौमिकता और न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	प्रतिज्ञा	अन्य धर्मों और आस्थाओं के प्रति असहिष्णुता दिखाती है।
12	प्रमाण	एक धर्म को श्रेष्ठ मानने का दावा करती है, जबकि अन्य दृष्टिकोणों को नकारती है।
13	हेतु	केवल एक धर्म की नाफरमानी को सजा का कारण बताती है।
14	उपमान	अन्य धार्मिक विश्वासों को नकारती है, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।
15	व्याप्ति	सजा केवल एक धर्म से संबंधित नहीं होती, यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण से गलत है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तार्किक और नैतिक दृष्टिकोण से कई असंगतियाँ हैं, जो केवल एक धर्म को श्रेष्ठ मानने और अन्य आस्थाओं को नकारने पर जोर देती हैं। यह दृष्टिकोण सार्वभौमिकता और न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

आयत 16

आयत का अनुवाद:

"और उनके नीचे भी (आग ही के) बिछौने ये वह अज़ाब है जिससे ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों मुझी से डरते रहो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रतिज्ञा (Proposition)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा अपने बन्दों को डराने के लिए अज़ाब का वर्णन करता है।
हेतु (Reason):
यह आयत शारीरिक और मानसिक भय को प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करती है, जो केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से सजा की बात करती है, जबकि सार्वभौमिक न्याय में यह सही नहीं माना जा सकता।
उदाहरण (Example):
वेदांत में यह बताया गया है कि भय और सजा से अधिक प्रभावी मार्ग आत्मज्ञान और सद्भावना हैं, जो सच्चे मार्गदर्शन का स्रोत होते हैं।
निगमन (Conclusion):
यह आयत डर के आधार पर प्रेरणा देने का प्रयास करती है, लेकिन यह सार्वभौमिक और दयालु दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती।

आयत 17
आयत का अनुवाद:
"और जो लोग बुतों से उनके पूजने से बचे रहे और ख़ुदा ही की तरफ रूजु की उनके लिए (जन्नत की) ख़ुशख़बरी है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जो लोग बुतों से बचते हैं और केवल ख़ुदा की पूजा करते हैं, उनके लिए जन्नत की खुशख़बरी है।
हेतु (Reason):
यह आयत यह तर्क देती है कि केवल ख़ुदा की पूजा करने से मुक्ति प्राप्त होती है, लेकिन यह अन्य धार्मिक

मान्यताओं की निंदा करती है और एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 23-25) में कहा गया है कि विभिन्न देवताओं की पूजा करने वाले भी एक ही परमात्मा की पूजा कर रहे होते हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत दूसरे धर्मों की आस्थाओं को नकारती है, जबकि सार्वभौमिक दृष्टिकोण के अनुसार सभी आस्थाओं को सम्मानित किया जाना चाहिए।

आयत 18

आयत का अनुवाद:

"तो (ऐ रसूल) तुम मेरे (ख़ास) बन्दों को ख़ुशख़बरी दे दो जो बात को जी लगाकर सुनते हैं और फिर उसमें से अच्छी बात पर अमल करते हैं यही वह लोग हैं जिनकी ख़ुदा ने हिदायत की और यही लोग अक़्लमन्द हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

उदाहरण (Example)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि जो लोग ख़ुदा की हिदायत का पालन करते हैं, वही अक़्लमन्द होते हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत यह मानती है कि केवल एक धर्म के अनुयायी ही सही हैं और अन्य धार्मिक मार्गों का पालन करने वाले नासमझ होते हैं।

उदाहरण (Example):

वेदांत में यह बताया गया है कि सभी पथों की मंशा एक ही है, अर्थात सत्य की प्राप्ति।

निगमन (Conclusion):

यह आयत अन्य धर्मों की बुद्धिमत्ता और सही मार्ग की निंदा करती है, जो सार्वभौमिक और सहिष्णु दृष्टिकोण के खिलाफ है।

आयत 19

आयत का अनुवाद:

"तो (ऐ रसूल) भला जिस शख़्स पर अज़ाब का वायदा पूरा हो चुका हो तो क्या तुम उस शख़्स की ख़लासी दे सकते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जब किसी व्यक्ति पर अज़ाब का वायदा पूरा हो चुका हो, तो उसे मुक्ति नहीं दी जा सकती।
हेतु (Reason):
यह आयत अज़ाब के बारे में एक निश्चित, अपरिवर्तनीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, लेकिन यह न्यायिक तर्क से मेल नहीं खाता।
उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति यदि सच में पश्चाताप करता है, तो उसे मुक्ति मिल सकती है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत क़ानूनी रूप से गलत है, क्योंकि प्रतिवाद या पश्चाताप के आधार पर मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, जो इस आयत में नकारा गया है।

आयत 20
आयत का अनुवाद:
"जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे उनके ऊँचे-ऊँचे महल हैं (और) बाला ख़ानों पर बालाख़ाने बने हुए हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं ये ख़ुदा का वायदा है (और) वायदा ख़िलाफी नहीं किया करता।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उनके लिए जन्नत में ऊँचे महल और नहरें होंगी।
हेतु (Reason):

यह आयत धर्म और भक्ति का पुरस्कार केवल एक धर्म के अनुयायियों को देती है, जबकि अन्य आस्थाओं को नकारती है।

उदाहरण (Example):

सांख्य योग में यह कहा गया है कि सच्चा ज्ञान और आत्मा की मुक्ति व्यक्ति की आस्था और उसके कर्मों पर निर्भर करते हैं, न कि एक विशिष्ट धर्म पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत धर्म के प्रति एकतरफा दृष्टिकोण अपनाती है और अन्य आस्थाओं के प्रति असहिष्णुता दिखाती है। यह सार्वभौमिक सिद्धांतों के खिलाफ है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	प्रतिज्ञा	डर और भय के आधार पर प्रेरणा देना सार्वभौमिक न्याय के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।
17	हेतु	अन्य धार्मिक आस्थाओं को नकारते हुए केवल एक धर्म को सही मानने का पक्ष।
18	उदाहरण	अन्य धार्मिक विश्वासों को गलत और अविवेकपूर्ण मानने की मानसिकता।
19	प्रमाण	पश्चाताप की संभावना को नकारना न्यायिक दृष्टिकोण से गलत है।
20	व्याप्ति	अन्य धर्मों के अनुयायियों के प्रति असहिष्णुता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण के खिलाफ।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में मुख्य रूप से धर्म के बारे में एकपक्षीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, जो अन्य धार्मिक आस्थाओं और पद्धतियों को नकारता है। यह सार्वभौमिकता और सहिष्णुता के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 21

आयत का अनुवाद:

"क्या तुमने इस पर ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन में चश्में बनाकर जारी किया फिर उसके ज़रिए से रंग बिरंग (के गल्ले) की खेती उगाता है फिर (पकने के बाद) सूख जाती है तो तुम को वह ज़र्द दिखायी देती है फिर ख़ुदा उसे चूर-चूर भूसा कर देता है बेशक इसमें अक़्लमन्दों के लिए (बड़ी) इबरत व नसीहत है।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से अपनी शक्ति और ज्ञान का प्रदर्शन किया है।

हेतु (Reason):

इसमें प्राकृतिक घटनाओं का संदर्भ दिया गया है, जो ख़ुदा की रचना की साक्षी हैं, लेकिन यह तर्क से नहीं जुड़ता, क्योंकि यह केवल अनुभव आधारित प्रक्रिया है और इससे अधिक गहरे तात्त्विक विचार नहीं प्रस्तुत किए गए।

उदाहरण (Example):

वेदांत में प्राकृतिक घटनाओं को दिव्य इच्छा के रूप में माना गया है, लेकिन वे भौतिक और आध्यात्मिक उद्देश्य के संतुलन से जुड़ी होती हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्राकृतिक घटनाओं के बारे में सही जानकारी देती है, लेकिन इसे अधिक गहरे और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है, जिसमें वेदांत के सिद्धांतों की समझ से लाभ मिल सकता है।

आयत 22

आयत का अनुवाद:

"तो क्या वह शख़्स जिस के सीने को ख़ुदा ने (कुबूल) इस्लाम के लिए कुशादा कर दिया है तो वह अपने परवरदिगार (की हिदायत) की रौशनी पर (चलता) है मगर गुमराहों के बराबर हो सकता है अफसोस तो उन लोगों पर है जिनके दिल ख़ुदा की याद से (ग़ाफ़िल होकर) सख़्त हो गए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा के हिदायत से जिनके दिल खुलते हैं, वही सही मार्ग पर चलते हैं।
हेतु (Reason):
यह आयत केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण का समर्थन करती है और दूसरों को गुमराह बताती है, जो सार्वभौमिक दृष्टिकोण से असहिष्णु है।
उदाहरण (Example):
सांख्य योग में यह कहा गया है कि आत्मज्ञान और ब्रह्म की प्राप्ति केवल एक विशेष धर्म से नहीं, बल्कि सच्चे ज्ञान से होती है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत असहिष्णु दृष्टिकोण अपनाती है, जो विभिन्न धार्मिक आस्थाओं की स्वतंत्रता और विविधता के खिलाफ है।

आयत 23
आयत का अनुवाद:
"ये लोग सरीही गुमराही में (पड़े) हैं ख़ुदा ने बहुत ही अच्छा कलाम (यावी ये) किताब नाज़िल फरमाई (जिसकी आयतें) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और (एक बात कई-कई बार) दोहराई गयी है उसके सुनने से उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने परवरदिगार से डरते हैं फिर उनके जिस्म नरम हो जाते हैं और उनके दिल ख़ुदा की याद की तरफ बा इतमेनान मुतावज्जे हो जाते हैं ये ख़ुदा की हिदायत है इसी से जिसकी चाहता है हिदायत करता है और ख़ुदा जिसको गुमराही में छोड़ दे तो उसको कोई राह पर लाने वाला नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा का क़लाम उन लोगों के लिए मार्गदर्शक है जो सच में उसकी हिदायत चाहते हैं।
हेतु (Reason):

यह आयत यह भी बताती है कि ख़ुदा अपनी हिदायत से किसी को नहीं बचा सकता, जो गुमराही में पड़ चुका हो।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्यक्ष 9, श्लोक 22) में कहा गया है कि जो लोग ईमानदारी से परमात्मा की ओर बढ़ते हैं, वे उसकी कृपा से हिदायत प्राप्त करते हैं, परंतु यह भी व्यक्तित्व की स्वतंत्रता का सम्मान करता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत विशेष धर्म और दृष्टिकोण की ओर झुकाव रखती है और इसका आधार गुमराही और आस्था के मामलों में एकतरफा निर्णयों की ओर जाता है।

आयत 24

आयत का अनुवाद:

"तो क्या जो शख़्स क़यामत के दिन अपने मुँह को बड़े अज़ाब की सिपर बनाएगा (नाज़ी के बराबर हो सकता है) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि तुम (दुनिया में) जैसा कुछ करते थे अब उसके मज़े चखो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि क़यामत के दिन ग़लत काम करने वालों को सजा मिलेगी।

हेतु (Reason):

यह आयत केवल क़यामत पर आधारित है और केवल विशेष धार्मिक विश्वास के अनुसार न्याय का निर्धारण करती है, जो सार्वभौमिक न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि अपराधों की सजा भौतिक और आध्यात्मिक दोनों संदर्भों में दी जाती है, और व्यक्ति का पश्चाताप उसके कर्मों से अधिक महत्वपूर्ण होता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय के संदर्भ में केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जो अन्य आस्थाओं और तात्त्विक विचारों से मेल नहीं खाती।

आयत 25

आयत का अनुवाद:

"जो लोग उनसे पहले गुज़र गए उन्होंने भी (पैग़म्बरों को) झुठलाया तो उन पर अज़ाब इस तरह आ पहुँचा कि उन्हें ख़बर भी न हुयी।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि जिन्होंने पैग़म्बरों की बातों को नकारा, उनके ऊपर अज़ाब आ गया।

हेतु (Reason):

यह आयत नकारात्मक दृषटिकोन अपनाती है और केवल एक धार्मिक समूह को सही बताती है, जबकि अन्य धर्मों और विचारों को गलत मानती है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्यक्ष 4, श्लोक 7) में यह कहा गया है कि ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा के लिए प्रकट होते हैं और अज्ञान को नष्ट करने के लिए कार्य करते हैं, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य के दृष्टिकोण से किया जाता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत असहिष्णु दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है, जो अन्य धार्मिक आस्थाओं को नकारता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमेय	प्राकृतिक घटनाओं को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से देखा गया है, जबकि तात्त्विक विचारों में गहराई की आवश्यकता है।
22	हेतु	एकतरफा दृष्टिकोण अपनाती है और अन्य धर्मों की निंदा करती है।
23	व्याप्ति	यह आयत केवल विशेष धार्मिक मार्ग का समर्थन करती है और सार्वभौमिकता की उपेक्षा करती है।

24	**प्रमाण**	**विशेष धार्मिक न्याय के संदर्भ में एकतरफा निर्णय लिया गया है।**
25	**प्रमाण**	**अन्य धर्मों और विचारों को नकारता हुआ एक असहिष्णु दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में एकतरफा दृष्टिकोण और धार्मिक असहिष्णुता दिखायी गयी है, जो अन्य धर्मों और आस्थाओं के प्रति नकारात्मक रवैया अपनाती है। यह सार्वभौमिकता और सहिष्णुता के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 26
आयत का अनुवाद:
"तो ख़ुदा ने उन्हें (इसी) दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई की लज़्ज़त चखा दी और आख़ेरत का अज़ाब तो यक़ीनी उससे कहीं बढ़कर है काश ये लोग ये बात जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ने उन लोगों को इस दुनिया में अपमान और दंड दिया है, और आख़ेरत का दंड इससे भी अधिक गंभीर है।
हेतु (Reason):
यह आयत दैवी दंड की व्याख्या करती है, लेकिन यह केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें दैवी न्याय की तात्त्विक और सार्वभौमिक व्याख्या नहीं दी गई।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 2, श्लोक 14) में भगवान कहते हैं कि कष्ट और दुःख मनुष्य के जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन इसका उद्देश्य आत्मा के विकास के लिए है, न कि केवल दैवी दंड देना।
निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है और इसका दायरा बहुत संकीर्ण है, जो अन्य तात्त्विक और धार्मिक दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाता।

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"और हमने तो इस कुरान में लोगों के (समझाने के) वास्ते हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि कुरान में दी गई मिसालें लोगों को नसीहत देने के लिए हैं।
हेतु (Reason):
यह आयत कुरान के अध्यायों को और उनके माध्यम से दी गई शिक्षाओं को महत्वपूर्ण और प्रमाणिक मानती है, लेकिन इसके संदर्भ में किसी भी तात्त्विक आलोचना या विमर्श की कमी है।
उदाहरण (Example):
मनुस्मृति (अध्यक्ष 2, श्लोक 6) में यह कहा गया है कि उपदेशों के माध्यम से ही समाज की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होता है, लेकिन यह शिक्षा सभी रूपों में विस्तारित और सार्वभौमिक होनी चाहिए।
निगमन (Conclusion):
यह आयत एकल दृष्टिकोण पर आधारित है, जो व्यापक और विविध दृष्टिकोणों की उपेक्षा करती है।

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"(हम ने तो साफ और सलीस) एक अरबी कुरान (नाज़िल किया) जिसमें ज़रा भी कजी (पेचीदगी) नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि कुरान साफ और सलीस भाषा में है, जिसमें कोई पेचीदगी नहीं है।
हेतु (Reason):
यह दावा किया गया है कि कुरान स्पष्ट है, लेकिन भाषाई पेचीदगी और व्याख्याओं की विविधता से यह तर्क कमजोर हो जाता है, क्योंकि विभिन्न विद्वान कुरान की व्याख्याओं को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत करते हैं।

उदाहरण (Example):
संख्य योग में यह कहा गया है कि ब्रह्मज्ञान और सत्य की वास्तविकता विविध दृष्टिकोणों से परिभाषित की जाती है, और यह केवल एक विशेष शब्द या भाषा पर निर्भर नहीं होती।
निगमन (Conclusion):
यह आयत भाषाई और व्याख्यात्मक पेचीदगी की उपेक्षा करती है, और इसे केवल एक दिशा में देखने का प्रयास करती है।

आयत 29
आयत का अनुवाद:
"ताकि ये लोग (समझकर) ख़ुदा से डरे ख़ुदा ने एक मिसाल बयान की है कि एक शख़्स (ग़ुलाम) है जिसमें कई झगड़ालू साझी हैं और एक ज़ालिम है कि पूरा एक शख़्स का है उन दोनों की हालत यकसाँ हो सकती हैं (हरगिज़ नहीं) अल्हमदोलिल्लाह मगर उनमें अक्सर इतना भी नहीं जानते।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि एक ग़ुलाम और एक मालिक की स्थिति का तुलनात्मक रूप से भिन्न होना चाहिए।
हेतु (Reason):
यह एक सरल तुलना प्रस्तुत करती है, लेकिन इसके माध्यम से यह केवल एक विशेष सामाजिक व्यवस्था की सशक्तीकरण करती है, जो समानता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्यक्ष 18, श्लोक 66) में कहा गया है कि आत्मा की स्थिति और उसका उद्देश्य सबके लिए समान है, चाहे वह किसी भी सामाजिक या भौतिक रूप में हो।
निगमन (Conclusion):
यह आयत सामाजिक असमानताओं को उचित ठहराती है, जबकि अन्य धार्मिक दर्शन और न्याय प्रणाली समानता और अधिकारों की अवधारणाओं को प्राथमिकता देते हैं।

आयत 30

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) बेशक तुम भी मरने वाले हो और ये लोग भी यक़ीनन मरने वाले हैं फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने परवरदिगार की बारगाह में बाहम झगड़ोगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि सभी लोग मरने वाले हैं और क़यामत के दिन परवरदिगार के सामने सभी को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा।

हेतु (Reason):

यह आयत मृत्यु और क़यामत के दिन की बात करती है, लेकिन इसे केवल धार्मिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से देखती है, जबकि सार्वभौमिक दृष्टिकोण से जीवन के उद्देश्य और मृत्यु का वास्तविक कारण तात्त्विक रूप में भी समझा जा सकता है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन में यह कहा गया है कि जीवन और मृत्यु के बाद के कर्मों के हिसाब से आत्मा का पुनर्जन्म होता है, लेकिन यह केवल कर्मफल से जुड़ा होता है, न कि किसी दैवी निर्णय से।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक और तात्त्विक रूप से समझने की आवश्यकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**प्रमेय**	**धार्मिक दृष्टिकोण से दैवी दंड की व्याख्या, लेकिन इसका तात्त्विक पहलू और सार्वभौमिकता की कमी।**
27	**प्रमाण**	**कुरान के अध्यायों को विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानना, लेकिन अन्य**

		दृष्टिकोणों की उपेक्षा।
28	**हेतु**	**भाषाई पेचीदगी की उपेक्षा, जो विभिन्न व्याख्याओं और दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाती।**
29	**उपमान**	**सामाजिक असमानताओं को सही ठहराना, जो समानता के सिद्धांतों के खिलाफ है।**
30	**प्रमेय**	**मृत्यु और क़यामत के दिन का एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना, लेकिन इसका तात्त्विक पहलू सीमित है।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में धार्मिक दृष्टिकोण के आधार पर जीवन, मृत्यु, और क़यामत की व्याख्याएँ की गई हैं, लेकिन इनमें तात्त्विक और सार्वभौमिक दृष्टिकोण की कमी है। ये आयतें अन्य दर्शन और न्याय प्रणालियों से मेल नहीं खातीं और केवल एक विशेष धार्मिक प्रणाली को समर्थन देती हैं।

आयत 31
आयत का अनुवाद:
"और ये लोग भी यक़ीनन मरने वाले हैं फिर तुम लोग क़यामत के दिन अपने परवरदिगार की बारगाह में बाहम झगड़ोगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि सभी लोग मरने वाले हैं और क़यामत के दिन अपने कर्मों का हिसाब देने के लिए एक दूसरे से झगड़ेंगे।
हेतु (Reason):
यह आयत क़यामत के दिन के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण प्रदान करती है, लेकिन इसका ध्यान केवल धार्मिक दृषटिकोन से है और इसमें जीवन के अन्य पहलुओं को नजरअंदाज किया गया है।
उदाहरण (Example):
संख्य योग में यह कहा गया है कि हर व्यक्ति का कर्मफल उसी के अनुसार होगा, यह पूरी तरह से तात्त्विक दृष्टिकोण पर आधारित है, जहां व्यक्ति के निर्णय और कृत्य उसका भविष्य निर्धारित करते हैं, न कि क़यामत

पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य से कर्मों का हिसाब देने का विचार प्रस्तुत करती है, जबकि जीवन के अन्य पहलुओं और दृष्टिकोणों को अनदेखा किया गया है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:

"तो इससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा पर झूठ (तूफान) बाँधे और जब उसके पास सच्ची बात आए तो उसको झुठला दे क्या जहन्नुम में काफिरों का ठिकाना नहीं है।"

चुना गया न्याय तत्वः

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत उन लोगों को ज़ालिम बताती है जो ख़ुदा पर झूठ आरोपित करते हैं और सच्ची बात को नकारते हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत यह आरोप लगाती है कि काफ़िर वह लोग हैं जो सच्चाई को नकारते हैं, लेकिन यह न केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, बल्कि यह अन्य धार्मिक और तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारती है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्यक्ष 4, श्लोक 34) में भगवान कृष्ण कहते हैं कि सत्य को समझने के लिए हर व्यक्ति को गुरु के पास जाना चाहिए, यह दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि सत्य की परिभाषा और उसके ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल एक धार्मिक प्रणाली को मान्यता देती है और इसे सार्वभौमिक रूप से समझने के लिए इसका अर्थ संकीर्ण है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:

"(ज़रूर है) और याद रखो कि जो षख़्स (रसूल) सच्ची बात लेकर आया वह और जिसने उसकी तसदीक़ की यही लोग तो परहेज़गार हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जो व्यक्ति सच्ची बात लेकर आता है और उसे मानता है, वही परहेज़गार है।
हेतु (Reason):
यह आयत यह प्रमाणित करती है कि सच्ची बात वही है जो कुरान और पैगंबर द्वारा दी गई हो, लेकिन इसे बिना किसी तात्त्विक या यथार्थ प्रमाण के स्वीकार कर लिया गया है।
उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन के अनुसार सत्य को केवल एक दिशा से नहीं देखा जा सकता, यह विभिन्न तर्कों और प्रमाणों के आधार पर समझा जाता है, जो सभी दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए विश्लेषित होते हैं।
निगमन (Conclusion):
यह आयत एक निश्चित दृष्टिकोण को स्वीकार करती है, जबकि यह सत्य को समझने के लिए अन्य विकल्पों या तात्त्विक दृष्टिकोणों की उपेक्षा करती है।

आयत 34
आयत का अनुवाद:
"ये लोग जो चाहेंगे उनके लिए परवरदिगार के पास (मौजूद) है, ये नेकी करने वालों की जज़ाए ख़ैर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जिन लोगों ने अच्छे काम किए, उनके लिए स्वर्ग में पुरस्कृत किया जाएगा।
हेतु (Reason):
यह आयत दैवी पुरस्कार की बात करती है, लेकिन यह केवल एक धर्म आधारित दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, जिसमें अन्य धार्मिक या तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारा जाता है।
उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्यक्ष 2, श्लोक 47) में भगवान कहते हैं कि कर्म ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है और सभी को अपने कर्मों के अनुसार फल मिलता है, लेकिन यह दैवी पुरस्कार पर निर्भर नहीं करता।
निगमन (Conclusion):
यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों के संदर्भ में विस्तारित करने की आवश्यकता है।

आयत 35
आयत का अनुवाद:
"ताकि ख़ुदा उन लोगों की बुराइयों को जो उन्होने की हैं दूर कर दे और उनके अच्छे कामों के एवज़ जो वह कर चुके थे उसका अज्र (सवाब) अता फरमाए।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि अच्छे कर्मों के बदले में परमेश्वर उन्हें उनका पुरस्कार देगा और बुराइयों को दूर करेगा।
हेतु (Reason):
यह आयत कर्मफल पर आधारित एक धार्मिक अवधारणा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका व्याख्यात्मक आधार केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि कर्मफल का सिद्धांत अन्य धार्मिक या तात्त्विक दृष्टिकोणों से कैसे मेल खाता है।
उदाहरण (Example):
संख्य योग में यह कहा गया है कि आत्मा के कर्मों का प्रतिफल उसके स्वयं के कर्मों के अनुसार होता है, जो परमेश्वर या किसी अन्य दैवी शक्ति पर निर्भर नहीं होता।
निगमन (Conclusion):
यह आयत एक निश्चित धार्मिक प्रणाली पर आधारित है, और इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमेय	क़यामत के दिन कर्मों का हिसाब देने का धार्मिक दृष्टिकोण, जो तात्त्विक दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाता।
32	हेतु	काफ़िरों को नकारना, जबकि विभिन्न धार्मिक और तात्त्विक दृष्टिकोण सत्य के विभिन्न रूपों को मान्यता देते हैं।
33	प्रमाण	एक निश्चित सत्य का समर्थन, जबकि सत्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है।
34	हेतु	दैवी पुरस्कार की अवधारणा पर आधारित, जो अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारती है।
35	प्रमाण	कर्मफल की धार्मिक अवधारणा, जो सार्वभौमिक दृष्टिकोण से सीमित है।

समग्र निष्कर्ष:
यह आयतें धार्मिक विश्वासों और दैवी पुरस्कार की अवधारणा पर आधारित हैं, जो तात्त्विक और सार्वभौमिक दृष्टिकोणों से मेल नहीं खातीं। ये केवल एक विशेष धार्मिक प्रणाली को समर्थन देती हैं और अन्य धर्मों या तात्त्विक दृष्टिकोणों के संदर्भ में इन्हें पूरी तरह से समझने की आवश्यकता है।

आयत 36
आयत का अनुवाद:
"क्या ख़ुदा अपने बन्दों (की मदद) के लिए काफ़ी नहीं है? (ज़रूर है) और (ऐ रसूल) तुमको लोग ख़ुदा के सिवा (दूसरे माबूदों) से डराते हैं और ख़ुदा जिसे गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि अगर किसी को ख़ुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसे कोई भी नहीं बचा सकता।
हेतु (Reason):

यह विचार एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जो यह मानता है कि केवल ख़ुदा की इच्छा से ही किसी का मार्गदर्शन होता है। इसमें यह उपेक्षित है कि व्यक्ति के अपने निर्णय और तर्क भी किसी के मार्गदर्शन में भूमिका निभा सकते हैं।

उदाहरण (Example):

संख्य योग के अनुसार, व्यक्ति को आत्मज्ञान और विवेक के आधार पर मार्गदर्शन मिलता है, न केवल किसी दैवी शक्ति के नियंत्रण में।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल एक दैवी दृष्टिकोण को स्वीकार करती है, जबकि अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारती है।

आयत 37

आयत का अनुवाद:

"और जिस शख़्स की हिदायत करे तो उसका कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ज़बरदस्त और बदला लेने वाला नहीं है (ज़रूर है)?"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि जब ख़ुदा किसी को मार्गदर्शन दे देता है, तो उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता।

हेतु (Reason):

यह आयत यह धारणा प्रस्तुत करती है कि केवल ख़ुदा का मार्गदर्शन ही अंतिम और सही है, जबकि यह तात्त्विक दृष्टिकोण से विचारणीय है कि व्यक्तियों के विचार और तर्क भी मार्गदर्शन प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण होते हैं।

उदाहरण (Example):

मनुस्मृति (3.73) में यह कहा गया है कि व्यक्ति का आत्मसंयम और विवेक ही उसे सही मार्ग पर चलने की क्षमता देता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता है।

आयत 38

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) अगर तुम इनसे पूछो कि सारे आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया तो ये लोग यक़ीनन कहेंगे कि ख़ुदा ने, तुम कह दो कि तो क्या तुमने ग़ौर किया है कि ख़ुदा को छोड़ कर जिन लोगों की तुम इबादत करते हो अगर ख़ुदा मुझे कोई तक़लीफ पहुँचाना चाहे तो क्या वह लोग उसके नुक़सान को (मुझसे) रोक सकते हैं या अगर ख़ुदा मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो क्या वह लोग उसकी मेहरबानी रोक सकते हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि ख़ुदा मेरे लिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा के अलावा किसी अन्य माबूद की मदद से न तो किसी को कष्ट से बचाया जा सकता है, न ही उसकी कृपा को रोका जा सकता है।

हेतु (Reason):

यह आयत यह धारणा पेश करती है कि केवल ख़ुदा ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड का स्वामी है, और अन्य इबादत की गई सत्ता पर निर्भर नहीं हो सकते।

उदाहरण (Example):

वेदांत दर्शन में यह कहा गया है कि आत्मा और परमात्मा के बीच कोई भेद नहीं है, और किसी भी शक्ति का असली स्रोत वह परम सत्ता ही है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को स्वीकार करती है, जबकि यह अन्य दर्शनशास्त्रों और विश्व दृष्टिकोणों से मेल नहीं खाती।

आयत 39

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) अमल किए जाओ मैं (39) भी (अपनी जगह) कुछ कर रहा हूँ, फिर अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह आफत आती है जो उसको (दुनिया में) रूसवा कर देगी और (आख़िर में) उस पर दायमी अज़ाब भी नाज़िल होगा।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्यास्पति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जो लोग ख़ुदा की इच्छाओं का पालन नहीं करते, उन पर दंड आएगा।
हेतु (Reason):
यह आयत यह निश्चित करती है कि कर्मों का प्रतिफल निश्चित रूप से आता है, लेकिन यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, और इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों से आलोचना किया जा सकता है।
उदाहरण (Example):
मनुस्मृति (12.56) में यह कहा गया है कि व्यक्ति को अपने कर्मों का परिणाम न केवल इस जीवन में, बल्कि जीवन के पश्चात भी भुगतना पड़ता है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्मफल के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण प्रदान करती है, लेकिन यह इसे केवल एक दैवी दृष्टिकोण से व्याख्यायित करती है, जबकि अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	हेतु	केवल दैवी मार्गदर्शन को स्वीकार किया गया, अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को अनदेखा किया गया।
37	हेतु	केवल ख़ुदा की मार्गदर्शन की अवधारणा, बिना अन्य तात्त्विक आधारों के।
38	प्रमेय	केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया, अन्य दृष्टिकोणों से इसका मेल नहीं है।
39	व्यास्पति	कर्मों का प्रतिफल दैवी दृष्टिकोण से परिभाषित, अन्य दृष्टिकोणों को नजरअंदाज किया गया।

समग्र निष्कर्ष:
यह आयतें एक निश्चित धार्मिक और दैवी दृष्टिकोण से निर्मित हैं, जो केवल एक विशेष धार्मिक प्रणाली पर आधारित हैं। ये आयतें अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारती हैं और उनके संदर्भ में संकीर्ण समझ प्रदान करती हैं। इन्हें व्यापक तात्त्विक दृष्टिकोणों के तहत फिर से समझने की आवश्यकता है।

आयत 40
आयत का अनुवाद:
"तुम कहो कि ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह (जो चाहो) अमल किए जाओ, मैं भी (अपनी जगह) कुछ कर रहा हूँ, फिर अनक़रीब ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह आफत आती है जो उसको (दुनिया में) रूसवा कर देगी और (आख़िर में) उस पर दायमी अज़ाब भी नाज़िल होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि जो लोग ख़ुदा के मार्गदर्शन से नहीं चलते, उन पर आफत और दायमी अज़ाब आएगा।

हेतु (Reason):
यह आयत कर्मफल की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, जिसमें यह दावा किया जाता है कि बुरे कर्मों का परिणाम दुष्ट व्यक्ति के लिए दायमी दंड और रूसवाई के रूप में आएगा। इसमें एक निश्चित विश्वास दिखाया जाता है कि केवल ख़ुदा की इच्छा से ही परिणाम निश्चित होते हैं।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता (4.36) में कहा गया है, "जो लोग सच्चे मार्ग पर चलते हैं, वे अपने कर्मों के परिणाम भुगतते हैं, चाहे वे अच्छे हों या बुरे।" यह दृष्टिकोण कर्मों के आधार पर परिणाम की अवधारणा को प्रस्तुत करता है, लेकिन इसका दायरा केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर नहीं रहता, बल्कि इसमें आत्मनियंत्रण और विवेक की भी भूमिका है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्मों के परिणाम को केवल एक दैवी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है और इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए। कर्मफल का सिद्धांत केवल धार्मिक व्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि

यह हर दर्शनशास्त्र में अपनी विशेष भूमिका निभाता है। अन्य तात्त्विक दृष्टिकोण जैसे संख्य योग और वेदांत में आत्मज्ञान और विवेक के आधार पर मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
40	हेतु	कर्मफल के सिद्धांत को केवल दैवी दृष्टिकोण से देखा गया, और अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों को नकारा गया।

समग्र निष्कर्ष:
यह आयत कर्मफल की अवधारणा को दैवी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल एक विशिष्ट धार्मिक परिप्रेक्ष्य में सीमित रहती है। इसे अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों जैसे संख्य योग और वेदांत से आलोचनात्मक रूप से देखा जाना चाहिए, जहां आत्मज्ञान और विवेक पर अधिक जोर दिया जाता है।

आयत 41-45 का विश्लेषण:

आयत 41
आयत का अनुवाद:
"हमने तुम्हारे पास (ये) किताब (कुरान) सच्चाई के साथ लोगों (की हिदायत) के वास्ते नाज़िल की है, पस जो राह पर आया तो अपने ही (भले के) लिए और जो गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल भी उसी पर है और फिर तुम कुछ उनके ज़िम्मेदार तो हो नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह कहती है कि कुरान सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ है, और जो लोग हिदायत पर आते हैं, वह अपनी भलाई के लिए आते हैं, और जो गुमराह होते हैं, उनका दोष उन्हीं पर है।

हेतु (Reason):
यह आयत एक स्वतंत्रता की अवधारणा प्रस्तुत करती है, जिसमें यह कहा गया है कि हर व्यक्ति के कर्मों का परिणाम केवल उसी पर निर्भर करेगा। यदि कोई व्यक्ति सही मार्ग पर चलता है तो वह खुद का भला करेगा, और यदि कोई गुमराह होता है, तो उसकी गुमराही का परिणाम भी उसी को भुगतना होगा।

उदाहरण (Example):
भगवद गीता (3.16) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं, "जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करता है, वह अपनी आत्मा को शुद्ध करता है।" यह जीवन के उद्देश्य की ओर कदम बढ़ाने के रूप में काम करता है, और यह स्वतंत्रता के साथ आत्म-निर्भरता का प्रतीक है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत एक स्वतंत्र इच्छा और कर्म के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, जो हर व्यक्ति की अपनी जिम्मेदारी है। लेकिन इसे हिन्दू दर्शन में आत्म-निर्भरता और व्यक्तिगत आचरण के सिद्धांत से जोड़ा जा सकता है, जो कर्म और परिणाम को एक मजबूत व्यक्तिगत संकल्प के रूप में देखता है।

आयत 42
आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा ही लोगों के मरने के वक़्त उनकी रूहें (अपनी तरफ़) खींच बुलाता है और जो लोग नहीं मरे (उनकी रूहें) उनकी नींद में (खींच ली जाती हैं) बस जिन के बारे में ख़ुदा मौत का हुक्म दे चुका है उनकी रूहों को रोक रखता है और बाक़ी (सोने वालों की रूहों) को फिर एक मुक़र्रर वक़्त तक के वास्ते भेज देता है जो लोग (ग़ौर) और फिक्र करते हैं उनके लिए (क़ुदरते ख़ुदा की) यक़ीनी बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह बताती है कि ख़ुदा ने लोगों की रूहों को अपनी तरफ खींचने का कार्य किया है, और मृत्यु के समय वह रूहों को वापस लेता है।

हेतु (Reason):
यह आयत मृत्यु के संदर्भ में ख़ुदा की शक्ति और क़ुदरत को दर्शाती है, जिसमें कहा गया है कि हर व्यक्ति की मृत्यु का समय केवल ख़ुदा द्वारा निर्धारित होता है।

उदाहरण (Example):
संख्य योग (3.39) में यह बताया जाता है कि मृत्यु एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसे समय और प्रकृति के नियमों के अनुसार नियंत्रित किया जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत प्राचीन दर्शन और विज्ञान के दृष्टिकोण से भी एक बिंदु पर खड़ी होती है, जो यह दर्शाता है कि जीवन और मृत्यु के बीच एक अंतर्निहित संतुलन होता है, लेकिन इस आयत में मृत्यु के बाद की प्रक्रिया को केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है।

आयत 43-44
आयत का अनुवादः
"क्या उन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (दूसरे) सिफारिशी बना रखे हैं (ऐ रसूल) तुम कहो कि अगरचे वह लोग न कुछ एख़्तेयार रखते हों न कुछ समझते हों (तो भी सिफारिशी बनाओगे) तुम कहो कि सारी सिफारिश तो ख़ुदा के लिए ख़ास है- सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत उसी के लिए ख़ास है, फिर तुम लोगों को उसकी तरफ लौट कर जाना है।"

चुना गया न्याय तत्वः
व्यास्पति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचनाः
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत कहती है कि ख़ुदा के अलावा कोई सिफारिशी नहीं हो सकता और सभी निर्णय और हुकूमत केवल ख़ुदा के हाथ में है।

हेतु (Reason):
यह आयत केवल ख़ुदा की सर्वोच्चता और सत्ता को प्रस्तुत करती है, जिसमें यह कहा गया है कि सभी अस्तित्व और निर्णय केवल ख़ुदा के अधिकार में हैं।

उदाहरण (Example):
मुक्तिका और वेदांत दोनों ही दर्शाते हैं कि सर्वोच्च सत्ता परमात्मा के पास है, और उसकी इच्छा के बिना कोई भी निर्णय नहीं हो सकता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत पूर्ण रूप से ख़ुदा की सर्वोच्चता और शक्ति को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे हिन्दू दर्शन में ब्रह्म के सिद्धांत से जोड़ा जा सकता है, जिसमें एक सर्वोच्च सत्ता से सभी निर्णय और नियंत्रण जुड़ा होता है।

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"और जब सिर्फ अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आख़ेरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुतनफ़िफर हो जाते हैं और जब ख़ुदा के सिवा और (माबूदों) का ज़िक्र किया जाता है तो बस फौरन उनकी बाछें खिल जाती हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

यह आयत यह कहती है कि जो लोग आख़ेरत पर विश्वास नहीं करते, उन्हें जब सिर्फ़ ख़ुदा का जिक्र किया जाता है, तो वे मुकर जाते हैं, जबकि अन्य देवताओं का जिक्र करने पर उनका मन प्रसन्न होता है।

हेतु (Reason):

यह आयत विश्वास और आस्थाओं का अंतर दर्शाती है, जिसमें यह कहा गया है कि कुछ लोग केवल अपनी इच्छाओं और विश्वासों के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं।

उदाहरण (Example):

संख्य योग में यही सिद्धांत है कि मनुष्य अपनी चेतना और विश्वास के अनुसार प्रतिक्रिया करता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत मनुष्य के मानसिक और आत्मिक स्वभाव को दर्शाती है, जिसे अन्य तात्विक दृष्टिकोणों में भी देखा जाता है, और यह भी एक आंतरिक समझ का हिस्सा है।

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया	मुख्य आलोचना

संख्या	तत्व	
41	प्रमाण	कर्म और परिणाम की स्वतंत्रता का सिद्धांत, लेकिन बिना किसी वास्तविक प्रमाण के प्रस्तुत किया गया।
42	प्रमेय	मृत्यु और जीवन के बीच के संतुलन को केवल दैवी दृष्टिकोण से देखा गया, अन्य दृष्टिकोणों को नजरअंदाज किया गया।
43-44	व्याप्ति	ख़ुदा की सर्वोच्चता को केवल दैवी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया, अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों से आलोचना संभव।
45	उपमान	व्यक्ति के मानसिक स्वभाव को केवल विश्वास और आस्था के दृष्टिकोण से देखा गया, अन्य सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को अनदेखा किया गया।

समग्र निष्कर्ष:

ये आयतें व्यक्ति की स्वतंत्रता, विश्वास और कर्मों के सिद्धांत को विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं, लेकिन इनका विश्लेषण अन्य तात्त्विक दृष्टिकोणों जैसे संख्य योग और वेदांत से भी किया जा सकता है, जो अधिक व्यापक और व्यक्तिगत दृषटिकों से इन अवधारणाओं को समझते हैं।

आयत 46

आयत का अनुवाद:

"तुम कह दो कि ऐ ख़ुदा (ऐ) सारे आसमान और ज़मीन पैदा करने वाले, ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले हक़ बातों में तेरे बन्दे आपस में झगड़ रहे हैं तू ही उनके दरमियान फैसला कर देगा।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि ईश्वर सारे आकाश और पृथ्वी का निर्माता है, और वही सभी विवादों का निर्णायक है।**
- **हेतु (Reason): यह कथन न्याय दर्शन के प्रमेय (वस्तु का ज्ञान) से परे है, क्योंकि यह दावे के रूप में ईश्वर के आकाश और पृथ्वी के निर्माता होने की बात करता है, लेकिन इसका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं देता है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में ब्रह्म (सर्वव्यापी तत्व) और सृष्टि के निरंतर परिवर्तन का सिद्धांत प्रत्यक्ष प्रमाण से मिलता है। विशेष रूप से, सांख्य योग में प्रकृति और पुरुष के सिद्धांत से ब्रह्म का निरूपण एक दार्शनिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण है, जो इस तरह के बिना प्रमाण वाले दावे के विपरीत है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण या तार्किक आधार के ईश्वर के सत्ता के दावे करती है, और यह प्रमेय का उल्लंघन करती है, क्योंकि प्रमेय का समर्थन प्रमाण से होना चाहिए।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:

"और अगर नाफरमानों के पास रूए ज़मीन की सारी काएनात मिल जाएग बल्कि उनके साथ उतनी ही और भी हो तो क़यामत के दिन ये लोग यक़ीनन सख़्त अज़ाब का फ़िदया दे निकलें (और अपना छुटकारा कराना चाहें) और (उस वक़्त) उनके सामने ख़ुदा की तरफ से वह बात पेष आएगी जिसका उन्हें वहम व गुमान भी न था।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि यदि नाफरमानों के पास समस्त पृथ्वी और उससे भी अधिक हो तो भी वे क़यामत के दिन कोई छुटकारा नहीं पा सकेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह कथन एक भविष्यवाणी है जो किसी वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण पर आधारित नहीं है। यह केवल अनुमान और विश्वास के आधार पर किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से न्याय दर्शन में, किसी भी सत्य को अनुमानी प्रमाण द्वारा सत्यापित किया जाता है। बिना किसी दृश्यमान प्रमाण के यह दावा किया जाता है कि किसी को क़यामत में सजा होगी, जो न्यायिक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना तर्क या प्रमाण के क़यामत के बारे में भविष्यवाणी करती है, और इसका अनुमान आधारित कथन न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।**

आयत 48

आयत का अनुवाद:

"और जो बदकिरदारियाँ उन लोगों ने की थीं (वह सब) उनके सामने खुल जाएँगीं और जिस (अज़ाब) पर यह लोग क़हक़हे लगाते थे वह उन्हें घेरेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जिन लोगों ने बुराई की है, उनके कर्म उनके सामने प्रकट होंगे और वे अज़ाब में घिरे होंगे।
- **हेतु (Reason):** यह दावा एक सामान्यीकरण है कि हर बुरा कर्म अंततः सामने आ जाएगा, लेकिन इसका कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** न्याय दर्शन में किसी भी दावे को व्याप्ति के सिद्धांत से प्रमाणित किया जाता है, जहाँ हर घटना और उसके कारण के बीच निश्चित संबंध होता है। यह आयत बिना इस सिद्धांत का पालन किए किसी भी बुराई के सामने आने का सामान्यीकरण करती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बुराई के परिणामों को सार्वभौमिक रूप से पेश करती है, लेकिन इसका प्रमाण और तर्क का आधार नहीं है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"इन्सान को तो जब कोई बुराई छू गयी बस वह लगा हमसे दुआएँ माँगने, फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअमत अता करते हैं तो कहने लगता है कि ये तो सिर्फ़ (मेरे) इल्म के ज़ोर से मुझे दिया गया है (ये ग़लती है) बल्कि ये तो एक आज़माइष है मगर उन में के अक्सर नहीं जानते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि मनुष्य बुराई आने पर भगवान से दुआ करता है, लेकिन बाद में जब कोई नेमत प्राप्त होती है तो वह इसे अपनी बुद्धि का परिणाम मानता है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक व्यक्ति के स्वार्थ और आत्म-गौरव की भावना को समझाती है, लेकिन इसे सही रूप में प्रस्तुत नहीं करती है। यह तर्क नहीं देती कि यह दुष्कृतियाँ और बुराई उस व्यक्ति के कर्मों के परिणामस्वरूप ही होती हैं।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता में भगवान कहते हैं कि मनुष्य अपने कर्मों के फल के अनुसार चलता है (गीता 3:16), जो न्याय दर्शन के कर्मफल सिद्धांत से मेल खाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत स्वार्थी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह कर्मफल सिद्धांत के विपरीत है और इसे तर्कसंगत तरीके से स्थापित नहीं करती।

आयत 50

आयत का अनुवाद:

"जो लोग उनसे पहले थे वह भी ऐसी बातें बका करते थे फिर (जब हमारा अज़ाब आया) तो उनकी कारस्तानियाँ उनके कुछ भी काम न आई।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि पूर्वजों की बुराईयों ने उन्हें अज़ाब से बचने नहीं दिया।**
- **हेतु (Reason): यह कथन केवल ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं दिया जाता। यह दावा बिना प्रमाण के सत्य मान लिया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान, उपमान और शब्द के माध्यम से सत्य को प्रमाणित किया जाता है, न कि केवल ऐतिहासिक अनुभवों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के बिना बुराईयों के परिणाम के बारे में दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	**प्रमेय**	**बिना प्रमाण के ईश्वर के निर्माता होने का दावा।**
47	**अनुमान**	**क़यामत के बारे में भविष्यवाणी बिना तर्क और प्रमाण के।**
48	**व्याप्ति**	**बुराई के परिणामों को सार्वभौमिक रूप से सामान्य करना।**
49	Hetu (Reason)	**आत्म-गौरव को सही तरीके से प्रस्तुत नहीं किया।**
50	**प्रमाण**	**ऐतिहासिक अनुभवों के बिना बुराई के परिणाम का दावा।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में तर्क और प्रमाण की कमी है, और कई आयतों में प्रमेय, अनुमान, और व्याप्ति के सिद्धांतों का उल्लंघन किया गया है। यह आयतें न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं और उनका कोई ठोस तर्क या प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती हैं।

आयत 51
आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ उनके आमाल के बुरे नतीजे उन्हें भुगतने पड़े और उन (कुफ़्फ़ारे मक्का) में से जिन लोगों ने

नाफरमानियाँ की हैं उन्हें भी अपने अपने आमाल की सज़ाएँ भुगतनी पड़ेंगी और ये लोग (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो लोग नाफरमानियाँ करेंगे, उन्हें अपने कर्मों का फल भुगतना होगा, और ये लोग किसी भी रूप में भगवान को आज़िज़ नहीं कर सकते।
- हेतु (Reason): यह कथन क़ानूनी कारण (कर्मफल सिद्धांत) से मेल खाता है, लेकिन इसमें कर्मों के परिणामों का अवलोकन और तर्क के बिना सरलत: किया गया निष्कर्ष है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के न्याय और सांख्य सिद्धांतों में कर्मफल को लेकर बहुत स्पष्टता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण कर्म के फल की बात करते हैं (भगवद गीता 2:47), जबकि यहां आयत बिना कर्मफल के तात्कालिक परिणाम का सिर्फ़ निष्कर्ष देती है।
- निगमन (Conclusion): इस आयत में कर्मफल का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका तर्क बहुत सरल है और इसे व्यवहारिक दृष्टिकोण से जांचने का अवसर नहीं दिया गया है। यह बिना गहरे तर्क के कर्म के परिणामों की सजा के बारे में सामान्यीकरण करती है।

आयत 52
आयत का अनुवाद:
"क्या उन लोगों को इतनी बात भी मालूम नहीं कि ख़ुदा ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी फराख़ करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग करता है इसमें शक नहीं कि क्या इसमें इमानदार लोगों के (कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि ईश्वर अपनी इच्छा से किसी के लिए रोज़ी (संसारिक धन) को बढ़ा और घटा सकता है, और इसमें इमानदार लोगों के लिए कुदरत की निशानियाँ हैं।
- हेतु (Reason): यह कथन बिना प्रमाण के एक भावनात्मक अभिप्रेरणा है। इसमें तर्क या प्रमाण के बिना केवल यह कहा गया है कि इमानदार लोग कुदरत की निशानियों को देख सकते हैं, जो सामान्यीकृत बयान है।

- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह सिद्धांत है कि धन और संसाधन मनुष्य के कर्म और त्याग पर आधारित होते हैं, जैसा कि भगवद गीता (18:45) में स्पष्ट किया गया है। इस आयत का दृष्टिकोण अधिकतर अनिश्चित है और कोई सुस्पष्ट उदाहरण या प्रमाण नहीं प्रस्तुत करता है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के ईश्वर की इच्छा को संदर्भित करती है, जिससे तर्क और प्रमाण की कमी महसूस होती है।

आयत 53

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि ऐ मेरे (ईमानदार) बन्दों जिन्होने (गुनाह करके) अपनी जानों पर ज़्यादतियाँ की हैं तुम लोग ख़ुदा की रहमत से नाउम्मीद न होना बेशक ख़ुदा (तुम्हारे) कुल गुनाहों को बख़्श देगा वह बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: Upanaya (Application)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अगर लोग गुनाह करने के बावजूद ईश्वर की रहमत से नाउम्मीद नहीं होते, तो ईश्वर उनके गुनाह माफ़ कर देंगे।
- हेतु (Reason): यह कथन एक धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाता है, लेकिन न्यायिक दृष्टिकोण से यह उचित नहीं लगता क्योंकि यह कर्मफल सिद्धांत से मेल नहीं खाता। गुनाहों का बिना परिणाम के माफ़ करना कर्म के न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन करता है।
- उदाहरण (Example): भारतीय न्याय दर्शन में, गुनाह के परिणाम से मुक्ति केवल दया और सद्गति के माध्यम से हो सकती है, लेकिन इसमें अपराध के कर्मफल के सिद्धांत का पालन करना ज़रूरी होता है।
- निगमन (Conclusion): इस आयत में ईश्वर की दया और माफी की बात की गई है, लेकिन यह कर्मफल सिद्धांत के अनुसार न्यायिक दृष्टिकोण से लागू नहीं होती।

आयत 54

आयत का अनुवाद:

"और अपने परवरदिगार की तरफ रूजू करो और उसी के फरमाबरदार बन जाओ (मगर) उस वक़्त के क़ब्ल ही कि तुम पर जब अज़ाब आ नाज़िल हो (और) फिर तुम्हारी मदद न की जा सके।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लोग अपने परवरदिगार की तरफ़ रुख़ करें और उसकी फरमाबरदारी करें, वरना अज़ाब आ जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह कथन एक सामान्यीकरण है कि फरमाबरदारी नहीं करने पर अज़ाब आएगा, लेकिन यह व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाता। अगर फरमाबरदारी न करना सभी के लिए अज़ाब का कारण होता है, तो उसका एक अपरिवर्तनीय सिद्धांत होना चाहिए, जो यहां नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में व्याप्ति सिद्धांत के अनुसार, हर कारण और उसके प्रभाव का निश्चित और प्रमाणित संबंध होना चाहिए। इस आयत में यह संबंध अस्पष्ट है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति सिद्धांत के बिना केवल एक सामान्य चेतावनी देती है, जो पूरी तरह से स्थापित नहीं होती।**

आयत 55

आयत का अनुवाद:

"और जो जो अच्छी बातें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हई हैं उन पर चलो (मगर) उसके क़ब्ल कि तुम पर एक बारगी अज़ाब नाज़िल हो और तुमको उसकी ख़बर भी न हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लोग अच्छी बातों पर चलें, लेकिन यह चेतावनी भी देती है कि यदि वे समय रहते नहीं चलते तो अज़ाब आ सकता है।**
- **हेतु (Reason): यह सलाह एक अनुशासनात्मक दृष्टिकोण से दी गई है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि सभी अच्छाईयों पर चलने से बचाव होगा। यह केवल एक सामान्य निर्देश है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में किसी आदेश का पालन तभी किया जाता है जब उसका स्पष्ट और परीक्षण योग्य कारण होता है, जो इस आयत में नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत अच्छी बातों पर चलने का निर्देश देती है, लेकिन इसमें प्रमाण या तर्क की कमी है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	Hetu (Reason)	**कर्मफल सिद्धांत के बिना कर्मों का परिणाम प्रस्तुत किया गया।**

52	**प्रमेय (Prameya)**	**ईश्वर की इच्छा से रोज़ी देने का तर्क बिना प्रमाण के।**
53	Upanaya (Application)	**कर्मफल सिद्धांत के विपरीत माफी का आह्वान।**
54	**व्याप्ति (Vyapti)**	**फरमाबरदारी न करने पर अज़ाब की चेतावनी बिना व्याप्ति सिद्धांत के।**
55	Hetu (Reason)	**अच्छे कर्मों पर चलने का निर्देश बिना प्रमाण के।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई सिद्धांत बिना तर्क और प्रमाण के प्रस्तुत किए गए हैं। कई जगहों पर कर्मफल सिद्धांत का उल्लंघन किया गया है, और बहुत सी आयतों में सामान्य चेतावनियों को बिना स्थापित प्रमाण के दी गई हैं। इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन और भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि वे कई बार तर्कहीन और अपरिवर्तनीय सिद्धांतों से असंगत हैं।

आयत 56

आयत का अनुवाद:

"कहीं ऐसा न हो कि (तुममें से) कोई शख़्स कहने लगे कि हाए अफ़सोस मेरी इस कोताही पर जो मैने ख़ुदा (की बारगाह) का तक़र्रुब हासिल करने में की और मैं तो बस उन बातों पर हँसता ही रहा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत व्यक्त करती है कि कोई व्यक्ति अफ़सोस करेगा कि उसने ख़ुदा के मार्ग पर चलने में कोताही की।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक भावनात्मक प्रतिक्रिया को दिखाता है, लेकिन इसमें कोई विश्लेषणात्मक तर्क नहीं है कि व्यक्ति ने क्यों ऐसा किया या क्यों उसकी कोताही से परिणाम होंगे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, शारीरिक और मानसिक प्रयत्नों का फल और प्रत्यक्ष परिणाम अवश्य होता है (कर्मफल सिद्धांत)। परंतु इस आयत में केवल अफ़सोस की भावना को पेश किया गया है, बिना यह बताए कि क्यों व्यक्ति ने कोताही की।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भावनाओं और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया पर आधारित है, जिसमें कर्मफल के स्पष्ट कारणों का उल्लेख नहीं किया गया है।**

आयत 57

आयत का अनुवाद:

"या ये कहने लगे कि अगर ख़ुदा मेरी हिदायत करता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि व्यक्ति ख़ुदा की हिदायत न मिलने पर अपने गलत कार्यों के लिए उसे दोषी ठहराता है।
- हेतु (Reason): यह कथन कर्मफल सिद्धांत के विपरीत है, जिसमें व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी और प्रयास के अनुसार कार्य करना चाहिए। यह एक तर्कहीन प्रतिक्रिया है कि केवल ख़ुदा की हिदायत से ही सही मार्ग पर चलना संभव है।
- उदाहरण (Example): भगवद गीता (18:63) में भगवान श्री कृष्ण ने स्पष्ट किया है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छाशक्ति और प्रयास से मार्ग पर चलना चाहिए। यह आयत कर्मफल सिद्धांत के साथ मेल नहीं खाती।
- निगमन (Conclusion): इस आयत में व्यक्त विचार कर्म और जिम्मेदारी के सिद्धांत से मेल नहीं खाते और इसे केवल बाहरी तत्वों के अधीन माना गया है।

आयत 58

आयत का अनुवाद:

"या जब अज़ाब को (आते) देखें तो कहने लगे कि काश मुझे (दुनिया में) फिर दोबारा जाना मिले तो मैं नेकी कारों में हो जाऊँ।"

चुना गया न्याय तत्व: Pramana (Valid Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि लोग जब अज़ाब का सामना करेंगे, तो पछताएंगे और चाहेंगे कि अगर उन्हें दूसरा मौका मिले तो वे नेक कार्य करें।
- हेतु (Reason): यह तर्क एक सामान्य स्थिति को प्रस्तुत करता है, लेकिन यह तर्कशक्ति का अभाव दिखाता है क्योंकि इसमें यह बताया गया है कि किसी के भविष्य के कार्यों को अज़ाब के द्वारा बदला जा सकता है। कर्मफल सिद्धांत के अनुसार, भविष्य में अच्छे कर्म किए जा सकते हैं, लेकिन जब अज़ाब का समय आए तो इसे प्रभावित नहीं किया जा सकता।
- उदाहरण (Example): गीता (2:13) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि कर्मों का परिणाम निश्चित है और अज़ाब के आने के बाद कोई बदलाव नहीं हो सकता।

- निगमन (Conclusion): इस आयत में व्यक्त विचार कर्मफल के सिद्धांत से मेल नहीं खाते, क्योंकि अज़ाब के समय में सुधार या बदला नहीं जा सकता।

आयत 59

आयत का अनुवाद:

"उस वक़्त ख़ुदा कहेगा (हाँ) हाँ तेरे पास मेरी आयतें पहुँची तो तूने उन्हें झुठलाया और शेख़ी कर बैठा और तू भी काफिरों में से था (अब तेरी एक न सुनी जाएगी)।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जब किसी व्यक्ति ने ख़ुदा की आयतों को झुठलाया, तो उसके बाद कोई भी बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- हेतु (Reason): यह तर्क एक निश्चित और अपरिवर्तनीय कारण-प्रभाव संबंध को दर्शाता है, लेकिन यह केवल एक घोषित परिणाम है बिना स्पष्ट व्याप्ति सिद्धांत के।
- उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में यह महत्वपूर्ण है कि कारण और प्रभाव का प्रमाण हो, परंतु इस आयत में किसी भी प्रकार का प्रमाण नहीं दिया गया है, केवल एक निश्चित परिणाम की घोषणा की गई है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के परिणामों का सामान्यीकरण करती है, जिसमें व्याप्ति सिद्धांत का स्पष्ट अनुपालन नहीं है।

आयत 60

आयत का अनुवाद:

"और जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूठे बोहतान बाँधे - तुम क़यामत के दिन देखोगे उनके चेहरे सियाह होंगें क्या गुरूर करने वालों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (ज़रूर है)।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो लोग ख़ुदा पर झूठे बोहतान (झूठे आरोप) लगाते हैं, उनके चेहरे क़यामत के दिन सियाह हो जाएंगे और उनका ठिकाना जहन्नुम होगा।
- हेतु (Reason): यह कथन कर्मफल सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन इसका कारण-प्रभाव संबंध स्पष्ट नहीं है। कर्म का परिणाम कभी भी व्यक्तिगत उपेक्षा या शत्रुता के आधार पर न होकर, संतुलित और न्यायपूर्ण होना चाहिए।

- **उदाहरण (Example): न्याय में यह आवश्यक है कि प्रत्येक कर्म का परिणाम उसके स्वयं के गुण और दोष पर आधारित हो, और वह समाज के सामान्य नियमों के साथ मेल खाता हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत कर्मफल सिद्धांत को लागू करती है, लेकिन इसका कार्यान्वयन और सिद्धांत में स्पष्टता और तर्क की कमी है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	Hetu (Reason)	**यह आयत केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित है, बिना तर्क के।**
57	Hetu (Reason)	**कर्मफल सिद्धांत के विपरीत हिदायत न मिलने का आरोप लगाया गया है।**
58	Pramana (Valid Knowledge)	**अज़ाब के बाद सुधार का कोई तर्क नहीं दिया गया।**
59	Vyapti (Invariable Concomitance)	**केवल परिणाम की घोषणा, बिना प्रमाण के।**
60	Hetu (Reason)	**कर्मफल सिद्धांत की अस्पष्टता और प्रमाण की कमी।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में विभिन्न सिद्धांतों को बिना तर्क, प्रमाण, और व्याप्ति के प्रस्तुत किया गया है। कुछ आयतें कर्मफल सिद्धांत की ओर इशारा करती हैं, लेकिन यह सिद्धांत बिना पर्याप्त प्रमाण और प्रमाणिकता के है। इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन और भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि कई बार तर्क की कमी है और परिणामों का सामान्यीकरण किया गया है।

आयत 61
आयत का अनुवाद:
"और जो लोग परहेज़गार हैं ख़ुदा उन्हें उनकी कामयाबी (और सआदत) के सबब निजात देगा कि उन्हें तकलीफ छुएगी भी नहीं और न यह लोग (किसी तरह) रंजीदा दिल होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: **Vyapti (Invariable Concomitance)**
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि परहेज़गारों को ख़ुदा उनकी सआदत और कामयाबी के कारण निजात देगा, और उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी।
- **हेतु (Reason):** यह कथन एक निश्चित कारण-प्रभाव संबंध पर आधारित है, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि परहेज़गारी का वास्तविक मापदंड क्या है और इसे किस प्रकार परिभाषित किया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें किसी प्रकार का प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया कि परहेज़गारी से किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी।
- **उदाहरण (Example):** भगवद गीता (9:22) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जो लोग भक्तिपूर्वक कार्य करते हैं, उनके लिए वह हमेशा मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, लेकिन यह मार्गदर्शन जीवन में कठिनाइयों के बिना नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत कर्मफल सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि जीवन में कठिनाइयाँ और कष्ट अवश्य आते हैं, और केवल परहेज़गारी से किसी को पूरी तरह से तकलीफ से निजात नहीं मिल सकती।

आयत 62
आयत का अनुवाद:
"ख़ुदा ही हर चीज़ का जानने वाला है और वही हर चीज़ का निगेहबान है।"

चुना गया न्याय तत्व: **Pramana (Valid Knowledge)**
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि ख़ुदा हर चीज़ का जानने वाला और निगेहबान है।
- **हेतु (Reason):** यह एक सामान्य कथन है जो किसी प्रमाण या तर्क के बिना सटीकता से प्रस्तुत किया गया है। बिना प्रमाण के यह मात्र एक विश्वास प्रणाली है, जिसे तर्किक रूप से व्याख्यायित नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन के अनुसार, परमात्मा का साक्षात्कार और ज्ञान केवल सच्चे साधकों द्वारा किया जा सकता है, और यह अनुभवात्मक सत्य से प्रमाणित होता है, न कि केवल एक कथन से।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रमाण की कमी है और केवल एक विचार व्यक्त किया गया है जो तर्क और अनुभव से परे है।

आयत 63

आयत का अनुवाद:

"सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास हैं और जो लोग उसकी आयतों से इन्कार कर बैठें वही घाटे में रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि जो लोग ख़ुदा की आयतों का इन्कार करते हैं, वे घाटे में रहेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह एक स्पष्ट कारण-प्रभाव संबंध को दिखाता है, लेकिन यह केवल उन लोगों को घाटे में दिखाता है जो इन्कार करते हैं, बिना यह बताए कि इन्कार करने वाले लोग क्या कारणों से ऐसा करते हैं। क्या यह केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण से संबंधित है या इसके साथ कोई तर्क जुड़ा हुआ है, यह स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, हम पाते हैं कि आत्मज्ञान और सत्य का साक्षात्कार व्यक्तिगत प्रयासों और समझ से संबंधित होता है, न कि केवल किसी के कथन से।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में व्यक्त विचार कर्मफल सिद्धांत से मेल नहीं खाते, क्योंकि यह केवल इन्कार करने वालों को घाटे में दिखाता है, जबकि प्रत्येक व्यक्ति के कर्म का परिणाम उसकी स्वयं की समझ और प्रयासों से होता है।**

आयत 64

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि नादानों भला तुम मुझसे ये कहते हो कि मैं ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे की इबादत करूँ।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि दूसरों से इबादत करने के बारे में सवाल पूछने पर, पैग़म्बर (रसूल) को यह उत्तर देना चाहिए कि ऐसा नहीं हो सकता।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क केवल एक धर्म विशेष पर आधारित है और यह दूसरे धर्मों के दृष्टिकोण को अवमानित करता है। कोई भी व्यक्ति अपनी समझ और विश्वास के आधार पर अपनी पूजा या इबादत करता है, लेकिन यह आयत उस विविधता का सम्मान नहीं करती।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वैदिक धर्म, विविध पूजा पद्धतियों और ईश्वर के विभिन्न रूपों का सम्मान करता है। एक व्यक्ति को अपने विश्वासों के आधार पर पूजा करने की स्वतंत्रता होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक ही दृष्टिकोण को सही मानती है और अन्य विश्वास प्रणालियों को गलत ठहराती है, जो कि तर्क के दृष्टिकोण से अपरिपक्व है।**

आयत 65

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम्हारी तरफ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ जो तुमसे पहले हो चुके हैं यक़ीनन ये वही भेजी जा की है कि अगर (कहीं) शिर्क किया तो यक़ीनन तुम्हारे सारे अमल अकारत हो जाएँगे और तुम तो ज़रूर घाटे में आ जाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर कोई शिर्क (ईश्वर से साझेदारी करना) करता है, तो उसके सारे कार्य व्यर्थ हो जाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक नकारात्मक परिणाम दिखाता है, लेकिन यह शिर्क को क्यों गलत माना गया है, इसका कारण स्पष्ट नहीं किया गया। क्या यह सिर्फ़ धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, या इसके पीछे कोई तर्क है, यह अस्पष्ट है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से संख्य योग में, आत्मा और परमात्मा का भेद स्पष्ट किया गया है, और किसी व्यक्ति के कार्यों का परिणाम उसकी आध्यात्मिक स्थिति पर निर्भर करता है, न कि केवल बाहरी कार्यों पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत शिर्क को गलत ठहराती है, लेकिन बिना तर्क के और बिना यह बताए कि क्यों शिर्क करना व्यर्थ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	Vyapti (Invariable Concomitance)	परहेज़गारी से बिना कष्ट की उम्मीद का दावा, कर्मफल सिद्धांत के विपरीत।

62	Pramana (Valid Knowledge)	**बिना प्रमाण के केवल एक विश्वासपूर्ण कथन।**
63	Vyapti (Invariable Concomitance)	**इन्कार करने वालों को घाटे में दिखाना, बिना स्पष्ट कारण के।**
64	Hetu (Reason)	**केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया, दूसरों के विश्वासों का सम्मान नहीं किया गया।**
65	Hetu (Reason)	**शिर्क को व्यर्थ ठहराना, बिना स्पष्ट कारण के।**

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में व्यक्त विचारों की तार्किक स्पष्टता की कमी है। कुछ आयतें कर्मफल सिद्धांत के विपरीत, अनावश्यक कष्टों से मुक्ति और अन्य विश्वास प्रणालियों के प्रति असम्मान का संकेत देती हैं। भारतीय दर्शन में विविधता का सम्मान और तर्क का स्थान अधिक महत्त्वपूर्ण है, जो इन आयतों में दिखाई नहीं देता।

आयत 66
आयत का अनुवाद:
"बल्कि तुम ख़ुदा ही की इबादत करो और शुक्र गुज़ारों में हो।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि इंसान को केवल ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए और शुक्र गुज़ार होना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह एक सामान्य धार्मिक आदेश है, लेकिन इसका तर्क यह स्पष्ट नहीं करता कि क्यों केवल एक ईश्वर की पूजा करनी चाहिए और दूसरों की पूजा का विरोध किया गया है। क्या इसका आधार तर्क है, या यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, यह स्पष्ट नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (9:22) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जो लोग पूर्ण विश्वास और भक्ति के साथ कर्म करते हैं, वे अंततः ईश्वर के पास पहुँचते हैं। यहाँ पर एकल ईश्वर की पूजा का आदेश केवल एक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो दूसरों के विश्वासों का सम्मान नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धर्म के एकल दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, बिना इसके व्यापक तार्किक या अनुभवात्मक कारणों के। यह अन्य विश्वास प्रणालियों को नकारती है, जो एक तर्किक दृष्टिकोण से अपरिपक्व है।**

आयत 67

आयत का अनुवाद:

"और उन लोगों ने ख़ुदा की जैसी क़द्र दानी करनी चाहिए थी उसकी (कुछ भी) कद्र न की, हालाँकि (वह ऐसा क़ादिर है कि) क़यामत के दिन सारी ज़मीन (गोया) उसकी मुट्ठी में होगी और सारे आसमान (गोया) उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए हैं, जिसे ये लोग उसका शरीक बनाते हैं वह उससे पाकीज़ा और बरतर है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लोग ख़ुदा की क़द्र नहीं करते, जबकि वह क़यामत के दिन सारी सृष्टि का मालिक होगा और उसका कोई शरीक नहीं हो सकता।**
- **हेतु (Reason): इस कथन का आधार एक बृहद् ईश्वरवाद पर है, लेकिन यह साफ़ नहीं किया गया कि लोग अपनी क़द्र और विश्वास में क्यों विचलित होते हैं। क्या यह एक तर्क है, या केवल धार्मिक भावना का परिणाम है, यह स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (10:20) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "मैं सब कुछ हूं, सृष्टि का रचनाकार और अंत भी हूं", यह विचार एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में ईश्वर की महिमा को दर्शाता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में ईश्वर की महिमा और उसके अद्वितीय स्थान को स्थापित किया गया है, लेकिन यह किसी तर्क के बिना केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है। यह तर्कवादी दृष्टिकोण से अपर्याप्त है।**

आयत 68

आयत का अनुवाद:

"और जब (पहली बार) सूर फूँका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग ज़मीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर (हाँ) जिसको ख़ुदा चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा, फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौरन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि क़यामत के दिन जब सूर फूँका जाएगा, तो सभी लोग बेहोश हो जाएंगे, फिर बाद में उन्हें पुनः जीवित किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह कथन काल्पनिक घटना का वर्णन करता है, लेकिन इसका कोई भौतिक या तार्किक आधार नहीं है। क्या यह अनुभवात्मक रूप से सही है या केवल धार्मिक विचारों पर आधारित है, यह स्पष्ट नहीं किया गया।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से योग और सांख्य दर्शन में, जीवन और मृत्यु का एक क्रम है, और पुनर्जन्म या आत्मा का अवतरण एक अनुभवात्मक सत्य है, जो धर्म से अधिक तर्क और व्यक्तिगत अनुभव से जुड़ा है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक अलौकिक घटना का वर्णन करती है, जिसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 69
आयत का अनुवाद:
"और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और (आमाल की) किताब (लोगों के सामने) रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह ला हाज़िर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़रा बराबर) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में क़यामत के दिन के दृश्य का वर्णन किया गया है, जिसमें ज़मीन नूर से रोशन होगी और सभी लोग अपने कर्मों का हिसाब देंगे।**
- **हेतु (Reason): इस कथन में न्याय का एक सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसमें यह स्पष्ट नहीं किया गया कि कर्मों का हिसाब कैसे और किस आधार पर होगा। क्या यह केवल एक दिव्य व्यवस्था है या इसका कोई अन्य तर्क है, यह स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (4:17) में कर्मों का सिद्धांत और उनका फल प्राप्ति का विवेचन किया गया है, जहां व्यक्ति के कर्मों का फल उसकी आत्मा की स्थिति पर निर्भर करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसका तर्क नहीं दिया गया।**

आयत 70
आयत का अनुवाद:
"और जिस शख़्स ने जैसा किया हो, उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे ख़ूब वाक़िफ है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का पूरा पूरा बदला मिलेगा।**
- **हेतु (Reason): यह कथन कर्मफल सिद्धांत को प्रस्तुत करता है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि कर्मों का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाएगा। क्या यह केवल एक दिव्य न्याय है या इसके पीछे कोई अनुभवात्मक कारण है, यह स्पष्ट नहीं किया गया।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, विशेष रूप से कर्म योग में, कर्मों का परिणाम व्यक्ति की मानसिकता और उद्देश्य के आधार पर होता है, जो बाहरी कारणों से अधिक महत्वपूर्ण होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत कर्मफल सिद्धांत को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	Hetu (Reason)	**केवल एक धार्मिक आदेश, तर्क और अनुभव का अभाव।**
67	Hetu (Reason)	**ईश्वर के अद्वितीय स्थान को स्थापित करने में केवल धार्मिक विश्वास का प्रयोग।**
68	Vyapti (Invariable Concomitance)	**काल्पनिक घटना का वर्णन, भौतिक और वैज्ञानिक आधार की कमी।**
69	Hetu (Reason)	**न्याय का सिद्धांत बिना तर्क के, केवल धार्मिक दृष्टिकोण।**
70	Vyapti (Invariable Concomitance)	**कर्मफल सिद्धांत पर आधारित, लेकिन तर्क का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में वर्णित घटनाएँ और सिद्धांत तर्क और अनुभव से परे हैं और अधिकतर धार्मिक विश्वास पर आधारित हैं। इनका कोई भौतिक, वैज्ञानिक, या तर्कपूर्ण आधार नहीं है, और ये अन्य विश्वास प्रणालियों और दर्शन के साथ मेल नहीं खातीं।

आयत 71

आयत का अनुवाद:

"और जो लोग काफिर थे उनके गोल के गोल जहन्नुम की तरफ़ हकाए जाएँगे और यहाँ तक कि जब जहन्नुम के पास पहुँचेगें तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसके दरोग़ा उनसे पूछेंगे कि क्या तुम लोगों के पास कोई पैग़म्बर नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़कर सुनाते और तुमको इस रोज़ (बद) के पेश आने से डराते। वे लोग जवाब देंगे कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अज़ाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगा।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में काफ़िरों के बारे में कहा गया है कि वे पैग़म्बरों के संदेशों को नकारते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अज़ाब का सामना करना पड़ेगा।
- हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि काफ़िरों को अज़ाब मिलेगा क्योंकि उन्होंने पैग़म्बरों के संदेशों को अस्वीकार किया। परंतु, इस तर्क का कोई वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार नहीं है, और यह केवल धार्मिक विश्वास पर निर्भर है।
- उदाहरण (Example): भगवद गीता में श्री कृष्ण कहते हैं कि जो लोग श्रद्धा से परे होते हैं, वे नश्वर संसार में फंसे रहते हैं (Bhagavad Gita 9:32)। हालांकि, यहां भी न्याय और कर्म के सिद्धांत पर आधारित तर्क दिया गया है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत काफ़िरों के लिए एक धार्मिक सजा का परिकल्पना प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल विश्वास पर आधारित है और तर्क के नजरिए से अपूर्ण है।

आयत 72

आयत का अनुवाद:

"तब उनसे कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाज़ों में धँसो और हमेशा इसी में रहो, ग़रज़ तकब्बुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है।"

चुना गया न्याय तत्व: Vyapti (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि जिन लोगों ने तकब्बुर (घमंड) किया, उन्हें जहन्नुम में डाल दिया जाएगा।

- **हेतु (Reason): इस आयत में तकब्बुर के आधार पर दंड का निर्धारण किया गया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि "तकब्बुर" को कैसे मापा जाएगा या यह किस पैमाने पर आधारित होगा। क्या यह केवल व्यक्तिगत भावना है या इसका कोई तर्कसंगत आधार है, यह अस्पष्ट है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (16:18) में कहा गया है कि अहंकार और घमंड से व्यक्ति का पतन होता है। हालांकि, यह तात्त्विक दृष्टिकोण पर आधारित है, जहां कर्म और मानसिकता की स्थिति के आधार पर आत्मा का मार्गदर्शन होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत घमंड पर आधारित सजा का प्रस्ताव करती है, लेकिन इसे सिर्फ विश्वास पर आधारित रखा गया है और इसका कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया।**

आयत 73

आयत का अनुवाद:

"और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिरदों-गिर्दा (गिरोह-गिरोह) बेहिष्त की तरफ़ (एजाज़ व इकराम से) बुलाए जाएगें, यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेंगे और बेहिष्त के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसके निगेहबान उनसे कहेंगे सलाम अलै कुम तुम अच्छे रहे, तुम बेहिष्त में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में बताया गया है कि जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे, वे स्वर्ग (बेहिष्त) में प्रवेश करेंगे और उन्हें सलाम किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में धार्मिक नैतिकता का आधार बताया गया है कि लोग अपने परवरदिगार से डरते हुए स्वर्ग में जाएंगे। लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया गया कि "परवरदिगार से डरने" को कैसे मापा जाएगा, या इसका कोई तर्कसंगत आधार है। क्या यह केवल एक भावनात्मक अवस्था है या इसके पीछे कोई साक्ष्य है, यह स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (18:66) में श्री कृष्ण ने कहा है कि अगर व्यक्ति अपने कर्मों को समर्पित करता है और धर्म के मार्ग पर चलता है, तो वह ईश्वर के पास पहुंचता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धर्म आधारित स्वर्ग की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह तर्क या वास्तविकता पर आधारित नहीं है।**

आयत 74

आयत का अनुवाद:

"और ये लोग कहेंगे ख़ुदा का शुक्र जिसने अपना वायदा हमसे सच्चा कर दिखाया और हमें (बेहिष्त की)

सरज़मीन का मालिक बना दिया कि हम बेहिष्त में जहाँ चाहें रहें तो नेक चलन वालों की भी क्या ख़ूब (खरी) मज़दूरी है।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में स्वर्ग में जाने वाले लोग खुदा का शुक्र अदा करते हैं क्योंकि उन्हें स्वर्ग का अधिकार मिला।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है कि जो लोग ईश्वर के नियमों का पालन करते हैं, उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलता है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं किया गया कि इन नियमों को पालन करने का कोई तर्क या वैज्ञानिक आधार है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (9:22) में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि जो लोग श्रद्धा और विश्वास से कर्म करते हैं, वे ईश्वर के पास पहुँचते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसमें कोई तर्क नहीं दिया गया।**

आयत 75
आयत का अनुवाद:
"और (उस दिन) फरिश्तों को देखोगे कि अर्ष के गिर्दा गिर्द घेरे हुए डटे होंगे और अपने परवरदिगार की तारीफ की (तसबीह) कर रहे होंगे और लोगों के दरम्यिान ठीक फैसला कर दिया जाएगा और (हर तरफ से यही) सदा बुलंद होगी अल्हमदो लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन।"

चुना गया न्याय तत्व: Hetu (Reason)
विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में क़यामत के दिन फरिश्तों द्वारा ईश्वर की स्तुति की जाएगी और सभी लोगों के कर्मों का निर्णय किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह धार्मिक विश्वास पर आधारित विचार है कि फरिश्तों द्वारा निष्पक्ष निर्णय लिया जाएगा, लेकिन इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह केवल विश्वास पर आधारित एक परिकल्पना है।**
- **उदाहरण (Example): भगवद गीता (4:17) में कर्मों का निर्णय और परिणाम का विवेचन किया गया है, जहां आत्मा के कर्मों का निर्णय उसके उद्देश्य और मानसिकता के आधार पर होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	Hetu (Reason)	**केवल धार्मिक विश्वास, कोई तर्कसंगत आधार नहीं।**
72	Vyapti (Invariable Concomitance)	**घमंड के आधार पर दंड का निर्धारण, तर्क का अभाव।**
73	Hetu (Reason)	**"डर" और "नैतिकता" पर आधारित स्वर्ग, तर्क का अभाव।**
74	Hetu (Reason)	**स्वर्ग में स्थान मिलने का धार्मिक तर्क, कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं।**
75	Hetu (Reason)	**धार्मिक विश्वास पर आधारित क़यामत का दृश्य, तर्क का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और भौतिक सत्य की कमी है, और यह मुख्यतः धार्मिक विश्वासों और कल्पनाओं पर आधारित हैं। इनके विचार अधिकतर भावनात्मक और विश्वास आधारित हैं, जिनमें तर्क और वैज्ञानिक स्पष्टता का अभाव है।